

“पाक” और “नापाक” में फर्क

इंजील : मुहाफिज 7:1-23

कुछ यहूदी लोग जो फ़रीसी^[a] कहलाते थे और कुछ मूसा^(अ.स) के कानून को पढ़ाने वाले उस्ताद येरुशलम में ईसा^(अ.स) के पास आए।⁽¹⁾ उन्होंने देखा की ईसा^(अ.स) के कुछ शागिर्दों ने नापाक^[b] हाथों से खाना खा लिया था।⁽²⁾ यहूदी लोग और उनमें से फ़रीसी खास तरीके से हाथ धोए बिना खाना नहीं खाते थे। वो अपने बाप-दादा के सिखाए हुए तौर तरीके पर सख्ती से अमल करते थे।⁽³⁾ यहूदी लोग जब बाज़ार से वापस आते थे तो अपने आपको बिना पाक करे खाना को हाथ नहीं लगाते थे। वो लोग अपने बुजुर्गों की और भी बहुत सी रस्मों को निभाते थे। उनके पास चीजों को पाक करने के लिए खास तरीके थे। वो चाय की प्याली को, घर को, बर्तनों को और बैठ कर खाना खाने वाली जगह को अलग अलग तरीके से पाक करते थे।⁽⁴⁾ फ़रीसियों और मूसा^(अ.स) के कानून को पढ़ाने वाले उस्तादों ने ईसा^(अ.स) से कहा, “आपके शागिर्द अपने बाप-दादा के सिखाए हुए तरीके पर अमल क्यों नहीं करते हैं? आपके शागिर्दों ने खाना खाने से पहले अपने हाथों को पाक नहीं किया, जैसा की हमारे कानून में लिखा हुआ है। उन्होंने ऐसा क्यों किया?”⁽⁵⁾

ईसा^(अ.स) ने जवाब दिया, “तुम सब बनावटी हो! नबी यशायाह^(अ.स) ने सदियों पहले तुम्हारे बारे में बिलकुल ठीक लिखा था। यसायाह^(अ.स) ने लिखा था, ‘ये लोग सिर्फ लफ़्ज़ों से अल्लाह ताअला की इज़्जत करते हैं अपने दिल से नहीं। इनके दिल अल्लाह ताअला की मुहब्बत से खाली हैं।’⁽⁶⁾ इनकी इबादत बेकार है। वो लोग जो भी सिखाते हैं वो अल्लाह ताअला के नहीं बल्कि इंसान के बनाए हुए उसूल हैं। वो लोगों को इंसान के बनाए हुए तरीके पर अमल करने का हुक्म देते हैं।’⁽⁷⁾ 8तुम अल्लाह ताअला का हुक्म भूल गए लेकिन तुम कभी इंसानी उसूलों पर अमल करना और उसे सिखाना नहीं भूले।”⁽⁷⁾

तब ईसा^(अ.स) ने उनसे से ये भी कहा, “तुमने बड़ी चालाकी से अल्लाह ताअला के हुक्म को किनारे करने का तरीका निकाल लिया है और अपने तौर तरीके को आम कर दिया है!”⁽⁹⁾ मूसा^(अ.स) ने भी कहा था, ‘अपने माँ-बापा की इज़्जत करना।’^[c] और ‘जो कोई अपने माँ-बाप की बुरा कहे या उनसे बुरा सुलूक करे तो उसे मर जाना चाहिए।’⁽¹⁰⁾ लेकिन तुम लोग सिखाते हो कोई अपने माँ या बाप से कह सकता है, ‘मेरे पास जो सारी चीज़ें हैं, मैं आपके लिए इस्तेमाल नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने वादा किया है की वो सब मैं अल्लाह ताअला को दूंगा।’⁽¹¹⁾ इसी तरह से, तुम सबको सिखाते हो के अपने माँ-बाप के लिए कुछ भी ना करे।^[d]⁽¹²⁾ तो तुम लोगों को सिखाते हो की अल्लाह ताअला के कलाम को मानना ज़रूरी नहीं बल्कि तौर-तरीके और रीति-रिवाज ज़्यादा ज़रूरी हैं। तुम लोग इस तरह के और भी काम कर रहे हो।”⁽¹³⁾

तब ईसा^(अ.स) ने सारे लोगों को अपने पास फिर से बुलाया। उन्होंने कहा, “मेरी बात सुनो! हर कोई मेरी बात को ध्यान से सुने और समझे जो मैं कहने जा रहा हूँ।⁽¹⁴⁾ किसी चीज़ को खाने से इंसान गंदा नहीं होता बल्कि उस चीज़ से होता है जो वो करता है।⁽¹⁵⁾ जिन लोगों के पास कान हैं वो इसे ध्यान से सुनें और समझें!”⁽¹⁶⁾

जब ईसा^(अ.स) वहां से वापस घर के अंदर आ गए, तो उनके शागिर्दों ने उनकी कही हुई बातों का मतलब पूछा।⁽¹⁷⁾ ईसा^(अ.स) ने जवाब दिया, “क्या तुम भी नहीं समझ पाए? तुम अच्छी तरह जानते हो की इंसान को वो चीज़ बिलकुल नजिस नहीं करती जो बाहर से अंदर जाती है।⁽¹⁸⁾ खाना इंसान के दिल और दिमाग में नहीं जाता। खाना उसके पेट में जाता है और फिर उसके जिस्म में से हो कर गुजरता है।”⁽¹⁹⁾

ईसा^(अ.स) ने कहा, “सुनो! वो चीज़ें जो इंसान के अंदर से बाहर निकलती हैं, वो उसको नजिस करती हैं।⁽²⁰⁾ इंसान के दिल और दिमाग से जो भी शैतानी चीज़ें निकलती हैं: गंदे ख्याल, नाजाएज़ ताल्लुकात, चोरी, कत्ल, ज़िना,⁽²¹⁾ खुदगर्जी, लालच, लड़ाई-झगड़ा, झूट बोलना, बुरा तरीका, जलन, पीठ पीछे बुराई करना, गुरूर करना और बेवकूफी करना।⁽²²⁾ ये सारी चीज़ें इंसान के अंदर से निकल कर आती हैं। ये वो सारी चीज़ें हैं जो उसको गंदा करती हैं और अल्लाह ताअला के सामने नापाक कर देती हैं।”⁽²³⁾

[a] ये वो लोग हैं जो मूसा^(अ.स) के दिए हुए कानून पर सख्ती से अमल करते थे।

[b] उन्होंने उस तरीके से हाथ नहीं धोए थे जैसे फ़रीसी धोते थे।

[c] अल्लाह ताअला के दिए हुए दस कानून में से ये पांचवां है। (तौरैत : हिजरत 20:12)

[d] (कुरान मजीद : अल-इसरा 17:23)